INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENTIFIC INFORMATION
www.jsiinternational.com Research Article ISSN: 2583-8512

''पंजाबी लोक संगीत को समृद्ध बनाने में श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' का योगदान''

Tanu Chaudhary,
Research Scholar
Music and Dance Department
Kurukshetra University, Kurukshetra

Article Received on: 2/1/26; Revised on: 8/1/26; Approved for publication: 11/1/26

Keywords सांस्कृतिक, प्रतिबिम्बित, उद्गार, अलंकृत, झंकृत, सर्वश्रेष्ठ।

How to Cite this Article:

Tanu Chaudhary, **पंजाबी लोक संगीत को समृद्ध बनाने में श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' का योगदान** J. Sci. Info. 2026; 3 (10): 105-111

Abstract लोक संगीत को मानवीय समूह अपने दिल की धड़कनों से सींचता है, अरमानों से पालता है। लोक संगीत मानवीय जीवन की परम्परा के वेग के साथ घुला होता है, मूल प्रवृत्तियों के साथ जुड़ा हुआ होता है और जन्म भूमि के साथ बंधा हुआ होता है। लोक संगीत में मानवीय समूह या जाति विशेष की मूल ध्वनि की सारी स्वर लहरियां उभरती है। लोक संगीत किसी भी मानवीय समूह के सांस्कृतिक रूपी महल का नींव पत्थर है। लोक संगीत का जन्म प्रकृति के आंगन में होता है। लोक संगीत समाज की दैनिक अवस्थाओं को रंजक रूप में प्रतिबिम्बित करता है। लोकसंगीत एक ऐसी गंगा है जिसमें हर आयु तथा हर वर्ग का व्यक्ति डुबकियाँ लगाता है और स्वयं को धन्य समझता है। लोक संगीत जन साधारण का स्वाभाविक उद्गार है जो प्राचीन काल से मानवीय जीवन में सिहरन करता चला आ रहा है। लोक संगीत में प्रयुक्त गीतों में लोक बोली का प्रयोग होता है। इसी कारण इन गीतों की बोली (भाषा) मधुर व सरल होती है। इनकी बोली सरल एवं साधारण होने के कारण ये सहज ही मुंह पर चढ़ जाते है और होठों पर मिशरी की भाँति घुल जाते हैं। लोक संगीत के रचयिता अज्ञात होते है लेकिन किसी व्यक्ति विशेष द्वारा इन की रचना सहज स्वभाव से की होती है। यह कला मौखिक रूप से चलती हुई लम्बी यात्रा करते हुए रूप बदलती रहती है अर्थात लोकसंगीत पीढ़ी–दर–पीढ़ी सदियों से चलता रहता है। लोकसंगीत की यह विशेषता है कि यह कभी पुराना नहीं होता। इसमें हमेशा ताजे फूलों की सुगन्ध आती हैं। लोक संगीत में लोक मन की अभिव्यक्ति होती है। लोक संगीत के अत्यन्त सरल स्वरूप के कारण अनेकों लोक गीत बिना वाद्यों के या बहुत कम वाद्यों का प्रयोग करते हुए गाए जाते हैं। लोकसंगीत के सन्दर्भ में श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग जी ने कहा है, ''लोक संगीत की शर्त न अलगोजे है, न डफ की, न खेत की, न खलियान की। किसी भी समय किसी भी स्थान पर किसी भी अन्जान को वह मस्ती लुटाने को तत्पर रहता है।'' अतः हम कह सकते है कि लोक संगीत जनजीवन का वह आकर्षण वेग है जो उससे अलग हो ही नहीं सकता। लोक संगीत का न आदि है, न अन्त है यह तो केवल मात्र संगीतात्मक स्फूर्त अभिव्यक्ति है। भारत में प्रत्येक प्रदेश का अपना लोकसंगीत, लोक गीत एवं लोकधुनें है। परन्तु पंजाबी लोक संगीत का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है। उसमें संगीत के विविध रूप एवं तत्व अपने समस्त सौन्दर्य के साथ सम्मिलित होकर मानव मन के भावों को अलंकृत और झंकृत करते है। पंजाबी लोक संगीत कलात्मक सौन्दर्य से परिपूर्ण होने के कारण लोक जीवन के लिए अत्यन्त आनन्ददायक रहा है। पंजाबी लोक संगीत पंजाब के जन जीवन पर आधारित है जो पंजाबियों के मूल स्वभाव की विशेषताओं को अपने अन्दर समाविष्ट किए हुए है। पंजाबी लोक संगीत में पंजाब के लोगों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का पूर्ण विवरण मिलता है। पंजाबी लोक संगीत यहाँ के जन सामान्य के मनोभावों का सम्बन्ध सुन्दरता और शृंगार के साथ जोड़ता है। पंजाबी लोक संगीत हर पल, हर क्षण पंजाबियों के जीवन की अलग–अलग परिस्थितियों की सामूहिक अभिव्यक्ति है और पंजाबियों के रंगीले जीवन की मुंह बोलती तस्वीर है। पंजाबी लोक संगीत की परम्परा विश्व की लोक परम्पराओं में विशेष स्थान रखती है एवं श्रेष्ठता के पक्ष से सर्वश्रेष्ठ है। पंजाबी लोक संगीत के अभूतपूर्व विकास और इसे समृद्ध बनाने में जब हम महान कलाकारों के योगदान को निहारते है तो एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, व्यवस्थापक, संस्थापक, रचनाकार, गीतकार, गायक, पंजाबी स्वरों के सम्राट, पंजाबी गीतों की आत्मा, पंजाबी गायकी का मुकट श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' का अमूल्य योगदान पाते है। पंजाबी लोक संगीत को समृद्ध बनाने में श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' के योगदान का अवलोकन करना प्रस्तुत शोध का विषय रहेगा।

परिचयः

पंजाबी लोक संगीत के सच्चे उपासक श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' का जन्म पिता श्री खेड़ा राम व माता हरिनाम कौर के घर सन् 1910 में गांव ईशपुर चक्क नम्बर 384 तहसील टोभा टेक सिंह जिला लायलपुर (वर्तमान फैसलाबाद पाकिस्तान) में हुआ। आप के पिता जी अपने समय के प्रसिद्ध गायक थे एवं परम्परागत लोकधुनों के अच्छे विद्वान थे। वे हाशम शाह की विश्व प्रसिद्ध गाथा ''सस्सी' विशेष तौर पर गाया करते थे एवं बंझली बजाने में पूर्ण दक्ष थे। सन् 1919 में पिता श्री खेड़ा राम का देहान्त हो गया। तत्पश्चात आप अपनी माता के साथ नानके चले गये। आप के नाना श्री गुड़ा राम एक श्रेष्ठ लोक गायक थे।

यमला अपने नाना जी के पास बैठ कर घण्टों अभ्यास किया करते थे। बचपन से ही संगीत के प्रति आप की रूची प्रबल होने लगी थी। पिता व नाना दोनों संगीतकारों को विरासत में पाकर संगीत के प्रति आप की रूची और भी पनपने लगी।

संगीत कला की विभिन्न विधाओं में दक्षता प्राप्त करने के लिए आपने पंडित साहिब दियाल जी को अपना गुरु धारण किया। आपने उस्ताद चौधरी मजीद जी से भी संगीत की शिक्षा ग्रहण की जो कि शास्त्रीय संगीत के अच्छे गायक थे। संगीत के प्रति आपकी उत्सुकता व गम्भीरता को देखते हुए चौधरी मजीद साहिब ने ''होनहार विरमान के होत चिकने पात'' लोकोक्ति के आधार पर कहा कि यह बालक बहुत ही होनहार व गुणवान है। आपने प्रसिद्ध गायिका बेगम खुरसैदा से सुगम संगीत जैसे –टप्पा, माहिया इत्यादि की शिक्षा ग्रहण की। यद्यपि आप औपचारिक शिक्षा (स्कूली शिक्षा) प्राप्त करने से वंचित रहे।

श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' की शादी 1928 ई. में रामरखी से हुई। आपके पांच पुत्र व दो पुत्रियां है। आपके दो पुत्र जसदेव यमला व जसविन्द्र यमला आपकी लोक गायकी को आगे बढ़ा रहे है।

देश विभाजन के पश्चात आपने लुधियाना के जवाहर कैम्प में अपना निवास स्थान बनाया और संगीत की शिक्षा – दीक्षा आरम्भ कर दी। नरिन्द्र बीबा, जगत जग्गा, हरिभजन सिंह हीर, ज्ञान सिंह कंवल, जागीर सिंह तालब, चमन लाल गुरदासपुरी, कृष्ण लाल पठान कोटी व हंसराज हंस जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने आपसे संगीत की शिक्षा ग्रहण की और आपके शिष्य कहलाए।

लोक गायकी का सफल गायक लाल चन्द 'यमला जट्ट' 20 दिसम्बर 1991 को लोगों के दिलों में अपनी कला की अमिट छाप छोड़ता हुआ सदा के लिए चिर निद्रा में सो गया।

पंजाबी लोक संगीत को समृद्ध बनाने में श्री लाल चन्द 'यमला जट्ट' का योगदानः–

जब से कला ने जन्म लिया है उसके प्रचार एवं प्रसार में कलाकारों ने घोर परिश्रम, तपस्या, साधना एवं अपने जीवन के सुनहरे पलों को न्यौछावर करके कला की सेवा की है। कलाकार के बिना कला की स्मृति करना असम्भव है। पंजाबी लोक संगीत के संदर्भ में एक कलाकार जिन्हें पंजाबी लोक गायकी का 'भीष्म पितामह' कह कर पुकारा जाता है, जिन्हें आदर सहित 'उस्ताद जी' कह कर भी पुकारा जाता है। जो पंजाबी लोक संगीत का सच्चा उपासक–साधक था। जो केवल कला के लिए 'कमला', 'यमला', 'घेसला जट्ट' कहलाया वास्तव में उस महान कलाकार का नाम श्री लालचन्द था। पंजाबी लोक संगीत को महान बनाने में श्री लाल चन्द 'यमला जट्ट' का उत्तम योगदान है। उन्होंने सम्पूर्ण जीवन पंजाबी लोक संगीत की सेवा कर इसे शिखर तक पहुंचाने में अद्वितीय भूमिका निभाई। पंजाबी लोक संगीत को समृद्ध बनाने में श्री लाल चन्द 'यमला जट्ट' के योगदान को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से निहारा जा सकता है।

एक सफल गायक के रूप मेंः–

श्री लाल चन्द 'यमला जट्ट' ने पंजाबी लोक गायकों की रणभूमि में एक छोटे से संगीत उपासक व गायक के रूप में पर्दापण किया। वह अपनी वेशभूषा से सहज ही पहचाने जाते थे। वह 'तुरले वाली पगड़ी' बांधते थे जो पंजाबी गायकी का विशेष चिन्ह बन गया। 'यमला जट्ट' श्रोताओं की नब्ज को पहचान कर ही अपनी गायन कला का प्रस्तुतिकरण करते थे एवं इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि श्रोताओं की आकांक्षाओं की अवहेलना न हो और संगीत के प्रति उन की तन्मयता बनी रहे। उन का मत था कि जब गायक व श्रोता के दिलों की तारें एकसुर होती है तभी गीत में से संगीतमयः आनन्द प्राप्त होता है। 'यमला जट्ट' जी ने सदैव अपनी मीठी, मधुर व सुरीली आवाज में विधिपूर्वक गाया। उनकी कला का विशेष गुण था कि

वे शब्दों के स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण के साथ–साथ मर्यादा को भी नहीं छोड़ते थे। उन्होंने अखाड़े के रूप में मंच कार्यक्रमों का प्रारम्भ किया एवं अपनी मीठी छोटी आवाज से कला के मनोरंजक महान पर्वतों को भी झुक्का दिया।

सन् 1948 तक श्री लाल चन्द अपने गुरु पंडित साहिब दियाल जी के साथ ही कार्यक्रम किया करते थे। परन्तु गुरु जी ने आप को स्वतः कार्यक्रम करने का आग्रह किया। तब गुरु जी से आशीर्वाद लेकर अपना गायन आरम्भ किया। गुरुद्वारा साहिब के एक कार्यक्रम में अज्ञानतावश आपने 'हास्म सस्सी' जोकि एक प्रेम गाथा है को साध–संगत के बीच गाना आरम्भ कर दिया। सुशोभित संगत ने इस का बुरा मनाया। इसी बीच साध–संगत में से आवाज आई कि यह गायक तो 'कमला' है या ये तो 'यमला' है। यही से लाल चन्द 'यमला जट्ट' नामकरण प्रसिद्ध हो गया। आरम्भ में आप सारंगी, चकारा, बजली, अलगोजा, चिमटा, घड़–थाली और तूंबा से ही गाते थे, परन्तु आवश्यकताओं की पूर्ति हेतू अपना एक वाद्य 'तुम्बी' अविष्कृत किया। जो पंजाब के गायकों का हरमन प्यारा साज बन गया।

सन् 1950 के पश्चात आप की लोकप्रियता पंजाब के कोने–कोने में होने लगी। आपकी गायकी की चर्चा हर जगह होने लगी। पंजाब के लोक ग्रामीण क्षेत्र और शहरी क्षेत्र दोनों में ही आप की गायकी का डंका बजने लगा।

''1965 से 1985 तक 20 वर्ष तक रेडियों व दूरदर्शन एवं सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक सम्मेलनों, कान्फ्रेसों में आप की गायकी ने संगीत प्रेमियों को मन्त्र मुग्ध किया।''

आपने विदेशों में भी अपनी गायकी का प्रदर्शन किया। सन् 1978–79 में आपने कैनेड़ा, इंग्लैंड भ्रमण के दौरान बहुत से मंच कार्यक्रम दिए एवं पंजाबी लोकसंगीत के संदर्भ में लोक गायकी की शिक्षा भी दी। इंग्लैण्ड़ के गायकों ने आपकी उत्कृष्ट गायकी के सन्दर्भ में 24 नवम्बर 1989 को अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया। इस प्रकार पंजाबी लोक संगीत एवं गायकी ने नभमण्डल के चमकते हुए सितारे का भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी यश होने लगा। यह आपके अभ्यास और प्रयास का फल था कि 'यमला जट्ट' लोक गायकी का सफल प्रस्तुतकर्ता व सफल मंचकार सिद्ध हुआ। श्रीलालचन्द 'यमला जट्ट' एक साधारण सा लोक गायक था परन्तु आप द्वारा गीतों की गायन विधि और उन्हें प्रस्तुत करने के निराले ढंग ने आप को एक सफल कलाकार स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'यमला जट्ट' ने जीवनभर अश्लील गीतों या ऐसी गायकी का कभी उपयोग नहीं किया और हमेशा भारतीय परम्परा व संस्कृति की पालना करते रहे।

पंजाबी लोक संगीत विशेषतः पंजाबी लोक गायकी में आप की महान उपलब्धियों के कारण पंजाब आर्ट कौंसिल ने 1987 में आपको पंजाब राज्य का पुरस्कार प्रदान किया। 20 अक्तूबर 1988 को प्रो. मोहन सिंह फाऊंडेशन ने पंजाबी भवन लुधियाना में सम्मानित किया। 10 जनवरी 1989 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन द्वारा लखनऊ के रविन्द्रालय भवन में भारती संगीत नाटक अकैडमी का पुरस्कार दिया गया।''

लाल चन्द 'यमला जट्ट' की लोक गायकी में वे सब गुण विद्यमान है जो एक सफल गायक में होने चाहिए। उन्होंने लोक गायक के रूप में पंजाबी लोक संगीत की सच्ची सेवा कर के इसे समृद्ध, श्रेष्ठ व उत्कृष्ठ बनाने में यथासम्भव योगदान दिया।

एक रचनाकार के रूप में:–

श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' औपचारिक शिक्षा से वंचित रहे एवं अक्षर ज्ञान का बोध न होने के बावजूद आपने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व देश प्रेम के गीत लिखे और उनमें अपने मनोभावों को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया। 'यमला

जट्ट' जी के गीत अपनी विशेष शैली से अलग ही पहचाने जाते हैं एवं एक अलग प्रकार की गीत शैली से साधारण श्रोता तो क्या, विद्वान जी प्रभावित हुए बिना नही रह सके। इनमें भाषा का प्रयोग ऐसा है जो विद्वानों को भी चकित कर देता है। पहाड़ी, मलवई, दुवाबी इत्यादि भाषाओं का रंग आपकी रचनाओं में देखा जा सकता है। आप की सभी रचनाओं का भावार्थ स्पष्ट है एवं सामाजिक मर्यादा के अनुकूल रही। चाहे आपने इश्क अर्थात रोमांटिक गीत लिखे परन्तु अश्लीलता का रंग नहीं आने दिया। यमला जी की कविता में श्रृंगारिकता का उन्माद, वियोग का सन्ताप, वैराग्य की उदासीनता आदि सभी मनोभावों की अभिव्यक्ति अनेक रसों का उद्रेक करने में सक्षम है। श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे सुन्दर अलंकारों का प्रयोग किया गया है, जो कविता को चार चाँद लगा देते हैं। जैसेः– ''तिल्ली तेरी ईन्ज चमके, जिवे चमके आसमानी तारा। राहीयां नू राह भुल्ल गये, जद लौंग दा पिया लशकारा।

यमला जी ने संयोग के अतिरिक्त वियोग श्रृंगार के गीतों की भी रचना की। उन्होंने विरह भाव की अभिव्यक्ति बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की हैः–

''कणका जमीयां गिठ–गिठ लम्मीयां, आजा ढोल सिपाही आवे

तेरे बिछोड़े सुण वे सजणा–जान, दुखां विच पाईया वे।

प्यार तेरे दीया पैण तराटा, कूंज वांग कुरलाईया वे।

अखीयां विचो तीर चला के, धरती ते पथ्काईयां वे।''

उस्ताद यमला जट्ट जी के गीत साधारण प्रेम भाव से ऊपर उठ कर पुरानी प्रेम कथाओं से जोड़ देते थे।'' किसे ततड़ी ने लाल गवाइया, तती रेत फोलदी फिरे'' इस गीत को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

यमला जी कई बार श्रृंगार एवं वीर रस को एक साथ प्रस्तुत करते है। जैसेः–

''ठण्डी ठण्डी वा चन्ना, पैदीयां फुहारा वे,

आ जा मेरे चन्ना, जिदं तेरे उत्तो वारा वे।''

इस गीत के स्थाई बोलों में ''ठण्डी–ठण्डी वा'' एवं ''पैंदी फुहार'' श्रृंगार रस का वातावरण प्रस्तुत करती है वही पिया पर जान न्यौछावर करने का संकल्प श्रृंगार रस से वीर रस में परिवर्तित हो जाता है।

उस्ताद जी की आध्यात्मिक रचनाओं में सूफी कविता वाला रंग भी सम्मिलित हुआ है जैसेः–

''जंगल दे विच खुहा लुया दे, उते पवादे डोल सखीयां नाम साई दा बोल।'' इस गीत में सूफी रंग प्रलक्षित हुआ है।

श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' ने हिन्दू अवतारों व सिक्ख गुरुओं के जीवन चरित्रों पर अनेक गीतों की रचना की। जैसेः–

''सतगुरु नानक आ जा, दुनिया नू दीद दिखा जा, संगत पई पुकारदी,

तेरे हत्थ विच चाबी ओह दाता सारे संसार दी।

यमला जी की कविता में ढाडीओं वाली ''वार'' का वीर रस तथा किस्सा काव्य की रसपूर्ण शैली का अनूठा संगम देखने को मिलता है। जैसेः–

''मेरा रस्ता रोक ना गोरिए,

मैनू अम्मड़ी रही पुकार।

जिहने पैदा कित्ते देवते, बड़े–बड़े अवतार,

अज्ज सिर उहदे हे लटकदी दुश्मन दी दो बार।

दस हाणी अपनी मां दी, कीकूं लवां सहार।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'यमला जट्ट' ने देश प्रेम, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि सभी विषयों पर गीत लिखे है जो समस्त जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' जी अपनी विशेष लेखन कला के कारण एक सफल रचनाकार स्थापित हुए है।

एक संगीतकार के रूप मेंः–

श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' में वे सभी गुण विद्यमान है जो एक सफल संगीतकार में होने चाहिए। वे संगीत कला के सच्चे साधक थे और संगीत को एक उपासना, उच्च कला एवं श्रेष्ठ मनोरंजन के साधन के रूप में लेते थे। संगीत की महान कला उन्हें धरोहर के रूप में अपने पिता जी व नाना जी से प्राप्त हुई। पण्डित साहिब दियाल व चौधरी मजीद अपने समय के उच्च दर्जे के संगीतकार थे जिनसे यमला जी ने संगीत की शिक्षा ग्रहण की। अपने गुरुजनों से आपने लोक धुनों में प्रयोग होने वाले रागों का ज्ञान व रागों के शुद्ध स्वरों का ज्ञान प्राप्त किया। निरन्तर अभ्यास व संगीत के प्रति गम्भीर रूची के परिणास्वरूप यमला जी एक महान संगीतकार के रूप में स्थापित हुए। परन्तु एक संगीतकार के रूप में आपको उस दिन प्रामाणिकता मिली जिस दिन आपने अपने ही काव्य को स्वयं द्वारा अविष्कृत 'तूम्बी' के साथ आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित किया। पिता जी की प्रचलित धुन ''तेरा लुटिया शहर भंबोर नी सस्सी ऐ बेखबरे'' के आधार पर आपने हाशमशाह की प्रसिद्ध रचना ''नाजुक पैर मलूक सस्सी दे'', का बड़ी मधुर आवाज में गायन किया। यमला जी के मतानुसार, ''हमारी बहुत सारी लोकधुने भैरवी, पहाड़ी, सिन्दुड़ा, पीलू, तिलंग, आसा, काफी और मुल्तानी आदि रागों पर आधारित है।'' आपने लोकधुनों का निरन्तर अभ्यास कर के व शास्त्रीय संगीत की मुख्य विशेषताओं को अपने अन्दर आत्मसात् किया। पश्चिमी पंजाब के लोक संगीत की विशेषताएं भी इस संगीतकार में देखने को मिलती है।

यमला जट्ट की व्यक्तिगत गायन शैली ने उन्हें प्रवीण गायक सिद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वरों व शब्दों का स्पष्ट उच्चारण, आवाज की कोमलता, रसीलापन एवं ताल का पूर्ण ज्ञान इस कलाकार को संगीतकार के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं। नवजोत कौर कसेल के अनुसार ''उसमें फकीरों वाली बेपरवाही, कवियों वाली उच्च कल्पना और गायकों वाली मधुरता सभी एक जगह इकट्ठी हुई और वह एक सच्चे कलाकार के समान कविता एवं संगीत का संगम बन गया है।'' यमला जी का मत है कि ''हीर वारिसशाह'' को भैरवी व पहाड़ी दोनों रागों में गाया जा सकता है। वारिसशाह की ''हीर'' को आप सियाल कोटी शैली में रेडियों व मंच कार्यक्रमों में प्रस्तुत करते रहे है। इस के अतिरिक्त माहिया व टप्पे गाने

का भी अनोखा अंदाज देखने को मिलता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यमला जी में संगीत कला के सभी गुण विद्यमान है जो एक सफल संगीतकार में होने चाहिए।

यमला जी द्वारा अविष्कृत लोक वाद्य ''तूम्बी'' के साथ अपने गीतों की विशेष गायन शैली में प्रस्तुत करने के कारण आपको पंजाबी लोकसंगीत का श्रेष्ठ गायक व संगीतकार के रूप में स्वीकार किया जाता है।

लोक वाद्य 'तूम्बी' के अविष्कारक के रूप में:–

संगीत शिक्षा के दौरान ही आपने सुविधाजनक व विशेष प्रकार का वाद्य बनाने की योजना बनाई। आपने एक फुट लम्बी लकड़ी पर आठ ईंच की परिधि वाला छोटा सा तानपुरा अविष्कृत किया और जिसे ''तूम्बी'' का नाम दिया गया। आकार में छोटा होने के कारण इस वाद्य को गायकों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर आना–जाना सुविधाजनक व आसान होने के कारण पंजाबी संगीत के गायकों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। यमला जी को तूम्बी से बहुत प्यार था और उन्हें एक–दुसरे से अलग करना असम्भव है। वे भगवान से प्रार्थना करते थे कि मेरी ''तूम्बी'' की छणकार पंजाबी लोक संगीत के लिए समर्पित हो जाए। आप की तूम्बी की विशेषता के बारे में प्रो. किरपाल सिंह जी ने लिखा है :– ''दीन दुखी के वास्ते तूम्बी करे पुकार, मिट्ठे गीत अलापदी यमले जट्ट दी तार''

पंजाबी लोक संगीत में यह लोक वाद्य इतना प्रचलित हुआ कि गायक मुहम्मद सदीक, सुरिन्द्र छिन्दा, दीदार सन्धु, कुलदीप मानक, अमर सिंह चमकीला आदि ने ''तूम्बी'' के साथ गाना आरम्भ किया। यमला जी ने पंजाबी लोक गाथाओं व स्वयं रचित गीतों का सफल गायन ''तूम्बी'' के साथ किया। ''तूम्बी'' के साथ गाए गीतों के कारण उन्हें विश्व स्तर के लोक गायकों की श्रेणी में सम्मिलित किया। जिसके कारण आज भी उन्हें 'तूम्बी का सम्राट' कहा जाता है। यमला जी ने एक नए वाद्य का आविष्कार कर के पंजाबी लोक संगीत की वाद्य परम्परा को और भी समृद्धशाली बनाया।

निष्कर्ष:

पंजाबी लोक संगीत के क्षेत्र में श्री यमला जट्ट का एक विशेष स्थान है। उन्हें लोक संगीत में प्रयुक्त रागों, तालों एवं विविध लय प्रयोगों की शास्त्रीयता का पूर्ण ज्ञान था। तूम्बी का आविष्कार उन्हें विशेष श्रेय प्रदान करता है। वह पंजाबी लोक संगीत की रीड़ की हड्डी थे। अगर यह कहा जाए कि बिना यमला जट्ट के पंजाबी लोक संगीत अधुरा है तो अनुचित नहीं होगा। यमला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उनमें वे सभी गुण विद्यमान थे जो एक श्रेष्ठ गायक, संगीत शिक्षक और विद्वान में होते हैं। उन्होंने पंजाबी लोक संगीत को छोटे–छोटे गांवों से उठा कर विश्व स्तर पर ले जाने का सफल प्रयास किया। श्री लालचन्द 'यमला जट्ट' पंजाबी लोक संगीत के एक महान कलाकार एवं संत संगीतज्ञ थे। उन्होंने पंजाबी लोक संगीत को अत्यंत समृद्ध किया। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन पंजाबी लोक संगीत को श्रेष्ठ से अति श्रेष्ठ बनाने में लगा दिया। पंजाबी लोक संगीत का सच्चा सेवक 20 दिसम्बर 1991 को सदा के लिए आंखों से ओझल हो गया। लेकिन वह पंजाबी लोक संगीत के नभमण्डल में ध्रुव तारें की भांति हमेशा टिम–टिमाता रहेगा।

संदर्भ सूचीः

1. शर्मा, अरविन्द कुमार, पंजाब का लोक–संगीत, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
2. भादपुरी, सुखदेव, पंजाब दे लोक नासिक, लाहौर बुक शोध, संस्करण–2005
3. घुगिआणवी, निंदर, लाल चंद यमला जट्ट जीवन ते पटियाला, 1905
4. घुगिआणवी, निंदर, वो या जट्ट यमला, के.एल. पचौरी प्रकाशन, 2019
5. आदिल, बक्शीसिंह, पंजाबी संगीतकार, नवीन प्रकाशन, अमृतसर, 1978